विद्यार्थियों की शैक्षिक अभिवृत्ति का एक तुलनात्मक अध्ययन
(श्योपुर एवं शिवपुरी जनपद के विशेष सन्दर्भ में)

डॉ0 आई0जे0 निगम*
अलका गुप्ता**

प्रस्तावना :–

मानव एक सामाजिक प्राणी है। समाज में उसकी देन बहुत बड़ी है वही समाज का निर्माता और संरक्षक होता है। यही कारण है कि मनुष्य के जीवन में एवं समाज के जीवन में भी शिक्षा एक प्रकार का पौष्टिक पदार्थ व भोज्य के रूप में कार्य करता है। जिसके द्वारा शक्ति और बल मिलता हैं और फलस्वरूप मनुष्य और समाज दोनों आगे बढ़ते है। जन्म के समय शिशु निर्बल और इसके फलस्वरूप पराश्रित होता है शिक्षा के कारण ही उसे बल मिलता है और उसकी पराश्रिता दूर होती है शिशु बड़ा होकर समाज का उपयोगी सदस्य शिक्षा के कारण ही बनता है तथा समाज के सभी कार्यों में भाग लेता है। जनतांत्रिक युग में तो शिक्षा उन्नति का साधन है ही परन्तु शिक्षा के कारण ही नागरिक अपने कर्तव्यों को समझते और उत्तरदायित्व पूरा करते है प्राचीन काल में भी शिक्षा की उपादेयता आवश्यकता एवं महत्ता स्वीकार की गयी थी। यही कारण है कि शिक्षा के ऊपर सभी लोगों का ध्यान था तथा साधारण जनता से लेकर बड़े–बड़े दार्शनिक तथा राजकीय पुरूष भी इस पर विचार करते रहे हैं।

प्रस्तुत शोध अध्ययन के विषय को चुनने पर शोधकर्त्री को जिज्ञासा हुई कि वह ज्ञात करे कि शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति एवं आकांक्षा स्तर एक दूसरे से किस प्रकार सम्बन्धित है अर्थात् उसकी आवश्यकता बालक की अभिवृत्ति को किस ओर इंगित करता है परन्तु जब यह अभिवृत्ति (चाहे धर्म के प्रति हो या शिक्षा के प्रति) लक्ष्य बन जाती है तो इसका महत्व बालक के जीवन में उसके व्यक्तित्व के रूप में और अधिक हो जाता है। बालक के अन्दर सार्वभौमिक अभिवृत्तियों वाली शक्तियों का निर्माण हो जाता है। वह अपना स्थान समाज में प्रमुखता से रख पाता है। किसी भी समस्या के तह तक जाने के लिए हमें उसके कारणों एवं महत्वों के विषय में जानना आवश्यक होता है और यह तभी सम्भव है जब हम छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति से सम्बन्धित नित्य नई जानकारियां प्राप्त करें।

शोध कार्य के उद्देश्य :–

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी/अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मापन करना और उनके मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करना।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी/अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का मापन करना और उनके मध्य सार्थक अन्तर की जाँच करना।

शोध की परिकल्पना :–

शोधकर्ता ने अपने शोध कार्य में शून्य परिकल्पना को चुना है। अनुसंधान के लिए शून्य परिकल्पना सर्वोत्तम होती है।

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी/अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी/अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

परिसीमांकन :–

1. अध्ययन में हिन्दी माध्यम के 100 छात्र व 100 छात्राऐं तथा अंग्रेजी माध्यम के 100 छात्र व 100 छात्राऐं, इस प्रकार कुल 400 छात्र–छात्राओं को न्यादर्श के रूप में चयनित किया गया है।
2. यह शोध अध्ययन केवल जनपद श्योपुर एवं शिवपुरी, मध्य प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों तक ही सीमित किया गया है।
3. न्यादर्श का चुनाव माध्यमिक स्तर के कक्षा–12 के छात्र–छात्राओं को ही चयनित किया गया है।

शोध विधि :–

वर्तमान शोध अध्ययन हेतु शोधकर्ता द्वारा वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है, जिसका

* रीडर, आर0बी0एस0 महाविद्यालय, आगरा
** शोधकर्त्री, आर0बी0एस0 महाविद्यालय, आगरा

सम्बन्ध जनपद श्योपुर एवं शिवपुरी, मध्य प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा–12 के छात्र–छात्राओं के सर्वेक्षण, आंकड़ों का एकत्रीकरण, मूल्यांकन, विश्लेषण एवं व्याख्या के स्तर से है।

न्यादर्श :–

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता के द्वारा यादृच्छिकी न्यादर्श विधि के माध्यम से आँकड़ों का संकलन किया गया है। शोधकर्त्री द्वारा सभी जनपद में से श्योपुर एवं शिवपुरी, मध्य प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों को न्यादर्श के रूप में लिया गया है। जनपद श्योपुर एवं शिवपुरी, मध्य प्रदेश के माध्यमिक विद्यालयों में शोधकर्ता ने लाटरी विधि का प्रयोग करते हुए माध्यमिक विद्यालयों को अपने शोध कार्य हेतु चुना है।

प्रयुक्त उपकरण :–

इस अध्ययन हेतु शोधकर्त्री ने शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति– डॉ0 एस0एल0 चोपड़ा डीन, शिक्षा विभाग, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ का प्रयोग किया गया है।

प्रस्तुत शोध में प्रयुक्त सांख्यिकीय विधियाँ :–

प्रस्तुत शोध अध्ययन शोधकर्त्री ने ज्ञात करके शिक्षण मनोवृत्ति का आकलन कर निष्कर्ष प्राप्त किया है।

विश्लेषण एवं व्याख्या :–

प्राप्त परिणामों का सारणीयन व उनकी व्याख्या इस प्रकार है–

तालिका संख्या–01

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

क्र0सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	छात्र	100	8.03	1.64	6.22	1.13	N.S.
02	छात्राऐं	100	8.28	1.50			

N.S. असार्थक

तालिका संख्या–01 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान क्रमशः 8.03 व 8.28 तथा मानक विचलन 1.64 व 1.50 पाया गया। दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात मान 1.13 की गणना की। जिससे ज्ञात हुआ कि यह मान परिलक्षित सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मानों 1.96 से व 2.96 से कम पाया गया। **अतः परिकल्पना संख्या–01 ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा''–स्वीकृत की जाती है।** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसके कई कारण हो सकते है–

1. आंकडों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्रों की तुलना में छात्राओं का परीक्षण मध्यमान अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं की तुलना में छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति उच्च तो पायी गयी परन्तु सार्थकता की दृष्टिकोण से उनमें अन्तर नहीं पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में समानता उनकी शिक्षा के प्रति समान रूचि का पाया जाना है।
3. प्रायः पाया गया है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं में शिक्षा की होड़ के कारण उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति में समानता देखने को मिलती है।

ग्राफ संख्या–01

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का ग्राफीय अध्ययन

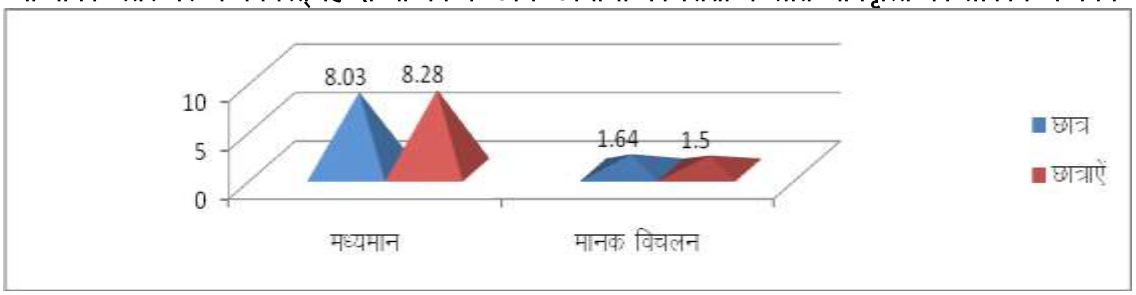

ग्राफ संख्या–01 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान क्रमशः 8.03 व 8.28 तथा मानक विचलन 1.64 व 1.50 पाया गया।

तालिका संख्या–02

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

क्र0सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	छात्र	100	7.83	1.44	0.44	0.93	N.S.
02	छात्राऐं	100	8.24	1.37			

N.S. असार्थक

तालिका संख्या–02 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान क्रमशः 7.83 व 8.24 तथा मानक विचलन 1.44 व 1.37 पाया गया। दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात मान 0.93 की गणना की। जिससे ज्ञात हुआ कि यह मान परिलक्षित सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मानों 1.96 व 2.96 से कम पाया गया। **अतः परिकल्पना संख्या–02 ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा''–स्वीकृत की जाती है।** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसके कई कारण हो सकते है–

1. आंकडों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की तुलना में छात्राओं का परीक्षण मध्यमान अपेक्षाकृत अधिक पाया गया। अतः कहा जा सकता है कि छात्राओं की तुलना में छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति उच्च तो पायी गयी परन्तु सार्थकता की दृष्टिकोण से उनमें अन्तर नहीं पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में समानता उनकी शिक्षा के प्रति समान रूचि का पाया जाना है।
3. प्रायः पाया गया है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र एवं छात्राओं में शिक्षा की होड़, प्रतियोगिता आदि के कारण उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति में समानता देखने को मिलती है।

ग्राफ संख्या–02

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का ग्राफीय अध्ययन

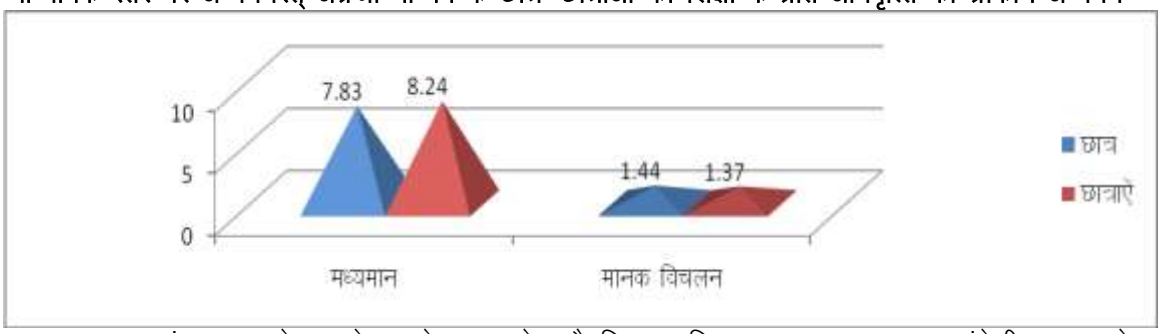

ग्राफ संख्या–02 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान क्रमशः 7.83 व 8.24 तथा मानक विचलन 1.44 व 1.37 पाया गया।

तालिका संख्या–03

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

क्र0सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	हिन्दी माध्यम के छात्र	100	8.03	1.64	0.21	0.98	N.S.
02	अंग्रेजी माध्यम के छात्र	100	7.83	1.44			

N.S. असार्थक

तालिका संख्या–03 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान 8.03 व 7.83 तथा मानक विचलन 1.64 व 1.44 पाया गया। दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात मान 0.98 की गणना की। जिससे ज्ञात हुआ कि यह मान परिलक्षित सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मानों 1.96 व 2.96 से कम पाया गया। **अतः परिकल्पना संख्या–03 ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं होगा''–स्वीकृत की जाती है।** माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में किसी स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसके कई कारण हो सकते है–

1. आंकडों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्रों की तुलना में अंग्रेजी माध्यम के छात्रों का परीक्षण मध्यमान अपेक्षाकृत कम पाया गया। परन्तु सार्थकता की दृष्टिकोण से उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की दृष्टिकोण से पाया गया है कि छात्र चाहे वह हिन्दी माध्यम का हो या अंग्रेजी माध्यम का उनमें अपने–अपने स्तर पर समान रूप से शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति की रूचि होती है।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को समान रूप से पूर्ण रूप से प्रभावित करती है।

ग्राफ संख्या–03

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का ग्राफीय अध्ययन

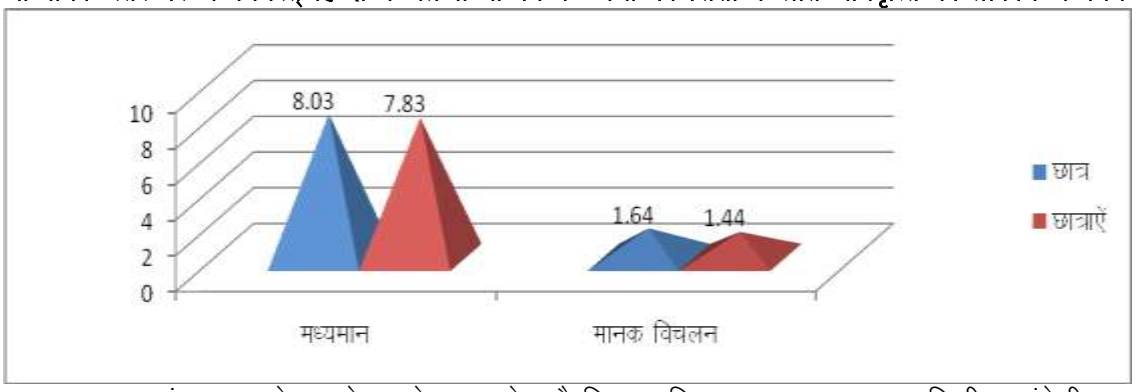

ग्राफ संख्या–03 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान 8.03 व 7.83 तथा मानक विचलन 1.64 व 1.44 पाया गया।

तालिका संख्या–04

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन

क्रम सं0	क्षेत्र	N	M	S.D.	SEd.	क्रान्तिक मान	सार्थकता
01	हिन्दी माध्यम की छात्राऐं	100	8.28	1.50	0.20	0.20	N.S.
02	अंग्रेजी माध्यम की छात्राऐं	100	8.24	1.37			

N.S. असार्थक

तालिका संख्या–04 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान 8.28 व 8.24 तथा मानक विचलन 1.50 व 1.37 पाया गया। दोनों के मध्य मानों में अन्तर पाया गया, यह अन्तर सार्थक है या नहीं, ज्ञात करने के लिए क्रान्तिक अनुपात मान 0.20 की गणना की। जिससे ज्ञात हुआ कि यह मान परिलक्षित सार्थकता स्तर 0.01 एवं 0.05 के मानों 1.96 व 2.96 से कम पाया गया। **अतः परिकल्पना संख्या–04 ''माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं**

होगा''–स्वीकृत की जाती है। माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में किसी स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया। इसके कई कारण हो सकते है–

1. आंकड़ों के अवलोकन से ज्ञात होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति के परीक्षण का मध्यमान हिन्दी माध्यम की छात्राओं की तुलना में अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं का अपेक्षाकृत कम पाया गया। परन्तु सार्थकता की दृष्टिकोण से उनमें कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में समानता उनकी शिक्षा के प्रति समान रूचि का पाया जाना है।
3. प्रायः पाया गया है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं में शिक्षा की होड़ के कारण उनकी शैक्षिक अभिवृत्ति में समानता देखने को मिलती है।

ग्राफ संख्या–04

माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का ग्राफीय अध्ययन

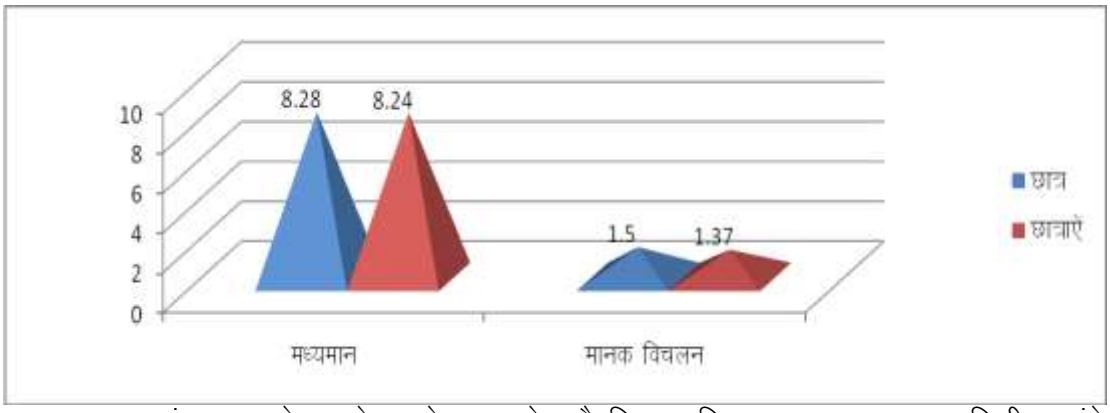

ग्राफ संख्या–04 के अवलोकन से स्पष्ट होता है कि माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण प्राप्तॉक का मध्यमान 8.28 व 8.24 तथा मानक विचलन 1.50 व 1.37 पाया गया।

प्रस्तुत शोध कार्य के निष्कर्ष :

1. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
2. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में किसी स्तर पर सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
3. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में किसी स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।
4. माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम की छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में किसी स्तर पर कोई सार्थक अन्तर नहीं पाया गया।

शैक्षिक उपयोगिता

प्रस्तुत शोध अध्ययन माध्यमिक स्तर पर अध्ययनरत् हिन्दी व अंग्रेजी माध्यम के छात्र–छात्राओं की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन का अवलोकन किया गया है। वर्तमान समय में जब आधुनिक अनुसंधान ने उच्च मानसिक प्रक्रियाओं के प्रकार एवम् विस्तार में वृद्धि की है, इससे इस क्षेत्र में प्रत्येक पक्ष सें सम्बन्धित षोध उपयुक्त होगा। यद्यपि इस क्षेत्र में बीसवीं शताब्दी के चौथे पाँचवें तथा छठे दशकों में अध्ययन हेतु उच्च प्रविधियों को विकसित किया गया है, परन्तु आज भी षोधकर्त्री इस बात से संतुष्ट नहीं हैं। शिक्षा के क्षेत्र में कोई भी प्रगतिशील कदम उठाने से पहले यह आवश्यक है कि शिक्षा से सम्बन्धित व्यक्ति प्रशासक अध्यापक आदि वर्तमान स्थिति से पूर्णरूपेण परिचित हो। शिक्षा सम्बन्धी कोई भी योजना तभी सफल हो सकती है जब तक कि वह वास्तिविक तथ्यों पर आधारित हो। पिछले कई वर्षो में शिक्षा का विस्तार इतनी तीव्र गति से हुआ है कि विस्तार के नाम पर विद्यालयों और शिक्षा की व्यवस्था में भारी प्रगाणता उत्पन्न हुई हैं। शिक्षा के बिना कोई भी छात्र न तो शैक्षिक उपलब्धि को प्राप्त कर सकता है न कि शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति को रख सकता है। क्योंकि

शिक्षा के कारण ही उसका व्यक्तित्व प्रभावशाली बनता है और उसकी आकांक्षऐं प्रबल होती है। अतः शिक्षा प्रणाली में ऐसे सुधार किये जाय, जिससे छात्रों की शिक्षा के प्रति अभिवृत्ति में वृद्धि हो सके और उनकी आकांक्षाऐं प्रबल दिखें, इसके लिए षिक्षा प्रणाली की पुनर्रचना हेतु षोध किये जायें।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची :–

1. कपिल, एच.के., (2004); अनुसंधान विधियाँ, भार्गव भवन, आगरा।
2. गैरिट, हेनरी ई0, (1989) ; शिक्षा और मनोविज्ञान में सांख्यिकी, कल्याणी पब्लिशर्स, नई दिल्ली।
3. गुप्ता डॉ0एस0पी0 एवं अलका गुप्ता,(2004);उच्चतर शिक्षा मनोविज्ञान,शारदा पुस्तक भवन इलाहाबाद, द्वितीय संस्करण।
4. पाण्डेय, रामशकल ; शैक्षिक नियोजन ओर वित्त प्रबन्धन, विनोद पुस्तक मन्दिर आगरा।
5. राय, पारसनाथ(2007) ; अनुसंधान–परिचय, लक्ष्मी नारायण अग्रवाल,आगरा।

Websites :

- www eric.ed.gov
- www.dartmouth.edu
- www.enwikipedia.org/ wiki
- www.google.co.in